# चले जाना, गुल्लू का

रात को मुझे रोने की आवाज़ सुनाई दी। मैने उठकर घड़ी देखी तो ग्यारह बज रहे थे! मैंने दादी से कहा,"दादी ये कौन रो रहा है?" दादी ने कहा कि उनका गुल्लू मर गया है। मैंने जाकर देखा गुल्लू घर में चादर ओढ़कर लेटा है, और रंजीत के पापा उसके पास में बैठे रो रहे हैं। बाहर सब लोग रो रहे हैं। गुल्लू की मम्मी बहुत रो रही है और उसके पापा भी रो रहे हैं। यह सब देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैं भी उनके पास बैठ गया और रोते-रोते गुल्लू को याद करने लगा।

थोड़ी देर बाद जीजी ने मुझे बुला लिया। मैं उनके पास गया। जीजी ने कहा, "तू भैया को फोन करके आ जा।" मैंने कहा, "क्यों?" जीजी ने कहा कि कह देना कि उनका गुल्लू मर गया। मैंने कहा जीजी अभी तो दुकान बन्द हो गई होगी। थोड़ी देर बाद जीजाजी आ गए। कहने लगे कि क्या हुआ? जीजी ने कहा कि भईया को फोन करने को कह रही हूँ। दिन्नू कह रहा है कि दुकान बन्द हो गई होगी। जीजाजी ने कहा, "उनके पास मोबाइल है।" फिर भईया के पास फोन लगाया। जीजी ने रोते-रोते कहा कि उनका गुल्लू मर गया है। थोड़ी देर बाद मैं अन्दर जाकर लेट गया और गुल्लू को याद करते-करते मेरी नींद लग गई।

सुबह मैं जल्दी उठ गया। मैंने बाहर आकर देखा, भैया आ गए हैं। मैं हाथ-मुँह धोने लगा। जीजी ने कहा, "दिन्नू नीचे चाय दे आ।" मैं चाय लेकर गया तो किसी ने भी नहीं ली। जो चाय वापिस आई थी उसे जीजी ने पिछवाड़े नाली में डाल दिया। फिर जीजी ने मुझे चाय दी। मैं चाय पीने लगा। मैंने सोचा कि मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा क्योंकि मेरा भाई जैसा दोस्त अब इस दुनिया में नहीं रहा। मैंने कभी छुटटी नहीं की पर आज तो करूँगा।

थोड़ी देर बाद बाँस, मटकी, घास और सफेद कपड़ा ले आए। ये सामान देखकर सब फिर से रोने लगे। फिर अन्दर गुल्लू को सफेद कपड़े पहना दिए। उसका सब सामान कपड़े, बस्ता, चप्पल एक झोले में रख दिया। मैं सब देख रहा था और गुल्लू को याद कर रहा था।

थोड़ी देर बाद गुल्लू को बाहर लाए और नसैनी पर लेटा दिया। ये देखकर सब बहुत ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। फिर गुल्लू को अन्तिम यात्रा के लिए उठाया। सब बोले "राम नाम सत्त है सत्य बोलो गत्त है।" सुनकर मोहल्ले के लोग बाहर आ गए और रोने लगे। गुल्लू को भदभदा के विश्राम घाट ले गए। रास्ते में हम "राम नाम सत्त है" बोलते गए। हम भदभदा पहुँच गए। फिर गुल्लू को सीमेंट के चबूतरे पर लेटा दिया और सब सात पत्थर लेकर गुल्लू के चक्कर काटने लगे और हाथ जोड़ने लगे। फिर गुल्लू को उठाकर उस जगह पर लेटा दिया गया जहाँ सब जलकर राख हो जाते हैं। सब लोगों ने लकड़ी उठाकर एक जगह रख दीं। फिर लकड़ियों पर गुल्लू को लेटा दिया। गुल्लू जो कपड़े पहना हुआ था उनको उतार दिया। फिर गुल्लू को लकड़ियों से ढँक दिया। एक डण्डे में आग लगाकर उन लकड़ियों में आग लगा दी जिन पर गुल्लू लेटा था। लकड़ियों में चारों तरफ आग लग गई। अब गुल्लू दूसरी दुनिया में जाने लगा। हम गुल्लू को जलता देखकर रोने लगे। फिर हमने लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े उठाकर गुल्लू की चिता में डाले।

मैं गुल्लू को देख रहा था। वह जल रहा था। मुझे याद आया कि मैंने गुल्लू से एक रुपया लिया था अब मैं उसे कैसे वापिस करूँगा? गुल्लू तो लकड़ियों में जल रहा है। मैंने अपनी जेब से एक रुपया निकालकर गुल्लू की चिता में डाल दिया। फिर हम वहाँ खड़े हो गए जहाँ गुल्लू की आत्मा के लिए शान्ति करेंगे। हम सबने हाथ जोड़े और आँखें बन्द कर लीं। मन में कहा भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे। फिर हम विश्राम घाट से बाहर आ गए। सब लोग गाड़ियों से चले गए। मेरे लिए जगह नहीं बची। मैं भदभदा रोड से पैदल आया। रास्ते में मैं गुल्लू को याद करने लगा। और मुझे एक गाना याद आया... चिट्ठी ना कोई सन्देश, जाने वो कौन-सा देश, जहाँ तुम चले गए।

गुल्लू तुम चले गए। तुमने सबको रुला दिया। मैं घर आ गया। घर के बाहर पानी से भरी दो बाल्टियाँ रखी थीं। मैं अपने ऊपर पानी डालकर घर में गया।

गुल्लू यानी रवि धूरिया की कहानी खत्म हुई। मैं चाहता हूँ कि उसका दूसरा जन्म हो और उसका नाम धोनी हो। वो मेरे साथ मैच खेले और छक्का मारे। चकमक

दिनेश घावरी भोपाल में छठवीं में पढ़ता है। उसने यह कहानी गुल्लू की मौत के चौथे दिन 24 मार्च 2008 को लिखी।